

प्रा.डॉ. राजेंद्र शहा

एम्.ए., एम्.फिल., पीएच.डी.  
प्राध्यापक, हिंदी विभाग,  
मुंधोजी महाविद्यालय,  
फलटण, जि.सातारा (महाराष्ट्र)

\*\*\* प्र मा प प त्र \*\*\*

मैं प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुंधोजी  
महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री. राजत राजू जनार्थन ने  
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत  
लघु शोध-प्रबंध "खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में 'भस्याकुर' का अनुशोलन" मेरे निर्देशन  
में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। यह परीक्षार्थी की मौलिक  
कृति है।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।



निर्देशक,

*Shrivardhan*  
(प्रा.डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शहा)

सातारा

दि. 25-5-1996

इस संस्कृति करते हैं कि प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध चरीक्षणार्थ  
अग्रेषित कीजिए जाए।

Dr. G. S. SURVE  
M. A. Ph. D.  
Head, Hindi Department,  
Lal Bahadur Shastri College,  
SATARA - 415 002.

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY  
Gaur. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY  
Lal Bahadur Shastri College,  
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR  
SATARA.



3.3.98  
Principal.

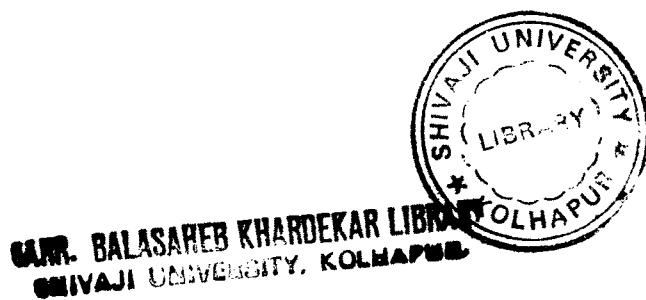
\*\*\* प्र ख्या प न \*\*\*

खंडकाव्य के परिप्रेक्ष्य में "भस्मांकुर" का अनुशीलन ।

यह लघुशोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल् (हिंदी) के लघु प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही हैं । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

फलटण -

Ram D V  
राम जनार्थन राऊत



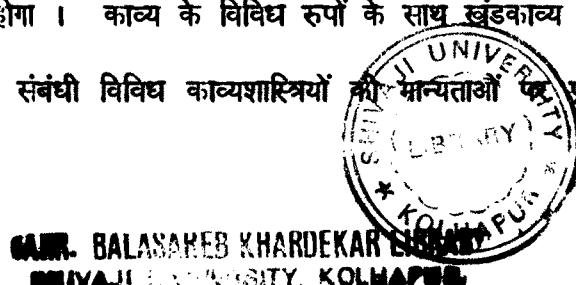
\*\*\* भूमिका \*\*\*

"भस्मांकुर" आधुनिक युग के महान काव्यों में अपनी अलग विशेषता के कारण अमर है। प्रस्तुत ग्रंथ "भस्मांकुर" का कवि हिंदी काव्य जगत में सुपरिचित है। उन्होंने "भस्मांकुर" के द्वारा समाज, राष्ट्र, विश्व का नव-निर्माण करने का प्रयास किया है।

नागार्जुनजी एक जनकवि हैं। उसका संपूर्ण साहित्य जनजीवन के चित्रण से भरा हुआ है। उन्होंने समस्त मानव जाति के सामने अपने मौलिक विचार रखकर जन जागृति करने का प्रयास किया है। जनता को सुखी एवं समृद्ध बनाने के लिए नागार्जुनजी बचपन से लेकर आज तक संघर्ष कर रहे हैं। इन के इसी रूप<sup>के</sup> में प्रभावित होकर 'भस्मांकुर' की ओर आकर्षित हुआ। जब एम.फिल के लघुशोध - प्रबंध के लिए विषयचयन करने के लिए मैंने सोचना शुरू किया तो नागार्जुन की "भस्मांकुर" रचना ने मेरा ध्यान बार-बार आकर्षित किया। मेरी रुचि मैंने मेरे शोध-निर्देशक, गुरुवर्य तथा जीवन पथप्रदर्शक डॉ.राजेंद्र शहा सरजी से कही तो उन्होंने मुझे प्रेरित तथा उत्साहित किया।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में कवि नागार्जुनजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया जायेगा। किसी भी साहित्यिक कृति का अध्ययन करने से पहले उसके रचेयिता की जीवनी देखनी पड़ती है क्योंकि उनके जीवन का प्रभाव उनकी कृति पर होता है। कवि नागार्जुनजी के व्यक्तित्व पर सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिवारिक वातावरण का इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उनका व्यक्तित्व कुंदन की भौति चमक उठा है। इन्हीं व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उनके संपूर्ण काव्य में हुई है। यहाँ चित्रण हम प्रथम अध्याय में देखेंगे।

द्वितीय अध्याय में खंडकाव्य का स्वरूप स्पष्ट किया जायेगा। स्वरूप के साथ खंडकाव्य का सैद्धांतिक विवेचन भी होगा। काव्य के विविध रूपों के साथ खंडकाव्य का भी स्थान निर्धारित किया जायेगा। खंडकाव्य संबंधी विविध काव्यशास्त्रियों की मान्यताओं पर प्रकाश डाला जायेगा।



अन्य समान काव्य रूपों से खंडकाव्य की तुलना करने का प्रयास भी किया जायेगा ।

तृतीय अध्याय में 'भस्मांकुर' की कथाकस्तु और चरित्रांकन का अध्ययन किया जायेगा ।

"काग-दहन" के पौराणिक प्रसंग को कामदेव, रति, वसंत, शिव और पार्वती आदि चरित्रों के द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा । "भस्मांकुर" के पात्र पौराणिक होकर भी उन्हें कवि ने आधुनिक रूप में चित्रित किया है । नागार्जुनजी ने अपने जनकल्याणकारी विचारों को इन पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

भावपक्ष और कलापक्ष के आधार पर काव्यगत सौंदर्य का मूल्यांकन किया जाता है । यही प्रयास में चतुर्थ अध्याय में करँगा । "भस्मांकुर" के शिल्पविधान में भाषा शैली, अलंकार, छंद, रस आदि पर विशेष चर्चा की जायेगी । इन अंगों की उत्पत्ति, विकास, परिभाषा एवं भेद की चर्चा करते हुए इन अंगों की योजना नागार्जुनजी ने 'भस्मांकुर' में कहाँ तक की है, यहाँ विवेचन चतुर्थ अध्याय में करेंगे ।

नागार्जुनजी के प्रगतिशील विचारों का विश्लेषण पाँचवे अध्याय में किया जायेगा । नागार्जुनजी मानवतावादी कवि है । उनके साहित्य का लक्ष्य है - मानव । संसार में चिर शांति प्रशापिक करने के लिए उन्होंने सबसे पहले मानव का सर्वांगिण विकास करने का प्रयास किया है ।

नागार्जुनजी स्वभावता विद्वोही कवि है । जो लोग जनता को चूसने का काम करते हैं उनके खिलाफ आवाज उठाकर उनपर व्यंग्य का प्रहार करते हैं । सचमुच नागार्जुनजी के समग्र काव्य रचनाओं में युग का प्रतिबिंब है ।

नागार्जुनजी युग का नव-निर्माण करना चाहते हैं । उन्होंने 'भस्मांकुर' काव्य के माध्यम से आज की समस्याओं का दर्शन करवाया है । रुढ़ियों, अंधविश्वासों, पाखंद, अन्याय, अत्याचार, शोषण, नारी और विज्ञान आदि समस्याओं को 'भस्मांकुर' खंडकाव्य के माध्यम से कैसे चित्रित किया है उसे देखें ।

जीव सृष्टि को जीवित रखने के लिए नागार्जुनजी ने "काम" को विशेष महसूल दिया है ।



'भस्मांकुर' काव्य मानवता का संदेश देनेवाला काव्य है। जिसमें कवि ने मानवता के हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने का आश्रह किया है।

षष्ठ अध्याय : उपसंहार में प्रथम अध्याय से लेकर पाँचवे अध्याय तक किए गये विवेचन की समग्र चर्चा की जायेगी।

इस प्रकार नागर्जुनजी ने अपनी इस महान् कृति द्वारा जन जागृति करके विश्व का नवनिर्माण करने का प्रयास किया है। इन्हीं प्रगतिशील, विश्वकल्याणकारी विचारों से मैं प्रेरित होकर 'भस्मांकुर' की ओर आकर्षित हुआ।

कवि नागर्जुनजी के 'भस्मांकुर' का अध्ययन करते समय मुझे अपने परमपूज्य गुरुवर्य प्रा. डॉ. राजेंद्र शहा सरजी ने अपने कार्यभार से बक्त निकालकर आंतरिक प्रोत्ताहन तथा मौलिक सूचनाएँ दी। उनका निर्देशन पाकर ही यह लघुशोध-प्रबंध कार्य में पूरा कर सका हूँ। यदि उनकी सतत प्रेरणा न होती तो मेरा शोधकार्य अधूरा ही रहता। मैं उनके प्रति अत्याधिक कृतज्ञ हूँ। इस ग्रंथ में जो शुटियाँ होंगी वह मेरी अल्पज्ञान की सीमा होंगी।

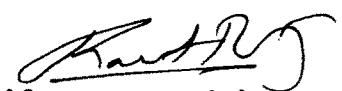
एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुर्वजी और शिवाजी कॉलेज, सातारा के डॉ. निकमजी ने इस शोधकार्य में बड़ी सहायता प्रदान की, अतः मैं उनका ऋणी हूँ। इस शोध कार्य में मुधोजी कॉलेज फलटण के प्राचार्य मा. देशमुख सरजी तथा मुधोजी कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. श्रीवास्तवजी, प्रा. रणवरेजी, प्रा. शेखजी का विशेष योगदान रहा है। मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

मुधोजी कॉलेज, फलटण के ग्रंथपाल श्री. जी. जी. पवारजी तथा श्री. उदय पवारजी का भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने मुझे विषयोचित सामग्री उपलब्ध करवायी। साथ ही एल.बी.एस. कॉलेज सातारा के प्राचार्य श्री. पुरुषोत्तम शेठ तथा ग्रंथपाल और सेवकों का और पुना के श्रीगणेश बुक सेंटर का भी विशेष आभारी हूँ।

मैं उन समस्त विद्वानों, विचारकों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी पुस्तकों का  
एवं विचारों का समावेश किया गया है।

मैं श्री. धनंजय कान्हेरे तथा सौ. प्रतिम महाजनी का आभारी हूँ जिन्होंने अल्पावधि में  
लघुशोध-प्रबंध का सुंदर टंकन तथा अन्य कार्य निर्धारित समय पर पूरा किया है।

आपका क्षमाप्रार्थी,



(श्री. राकेश झा. जे.)